M.M. Chine
3.3.5
Hindi

समकालीन विमर्श

(मोवि

संपादक

प्रा.डॉ.मंजूर सैय्यद

हिंदी विभागाध्यक्ष,
म.वि.प्र.संचालित कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र)

डॉ.ए.पी.पाटील

प्राचार्य,
म.वि.प्र.संचालित कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र)

मराठा विद्या प्रसारक समाज, नाशिक
बहुजन हिताय बहुजन सुखाय

समकालीन विमर्श

संपादक

प्रा.डॉ.मंजूर सैय्यद

हिंदी विभागाध्यक्ष, म.वि.प्र.संचालित

कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र)

अध्यक्ष

प्राचार्य डॉ. ए. पी. पाटील

मराठा विद्या प्रसारक समाज, नाशिक संचालित

कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, ओझर (मिग), नाशिक (महाराष्ट्र) पिन ४२२२०६

Phone : Office: 91-(02550) 206019,

e-mail : ozarcollege@gmail.com, Website : www.ozarcollege.com

प्रकाशन गृह

अनुक्रम

क्र.	आलेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
०१	समकालीन कविता में चित्रित स्त्री	डॉ. पी. व्ही. महालिंगे	९
०२	समकालीन हिंदी दलित कविता	डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय	११
०३	समकालीन हिंदी काव्य में नारी विमर्श	डॉ. कल्पना गवली	१२
०४	स्त्री–विमर्श और समकालीन कविता	डॉ. कमलेश कुमारी	१४
०५	चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में स्त्री–विमर्श	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	१७
०६	दलित विमर्श के यथार्थ अभिव्यक्तिकार ओमप्रकाश वाल्मिकी	गौतम पाटणवाड़िया	१८
०७	अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री–विमर्श	प्रा. गणेश शेकोकार	२०
०८	हिन्दी उपन्यासो में दलित चेतना	प्रा.डॉ.आश्विनीकुमार चिचोंलीकर	२२
०९	हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श	डॉ.गजाला शेख	२४
१०	समकालीन हिंदी कथा साहित्य और स्त्री–विमर्श	डॉ. रामचंद्र साळुंके	२६
११	इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श	डॉ. निलकंठ गिरि	२७
१२	स्त्री विमर्श : परिभाषा एवं परिव्याप्ति	शिराज शेख	२८
१३	हिंदी साहित्य में दलित चेतना	सुनिता यादव	३०
१४	समकालीन हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना	प्रा. संतोष पगार	३२
१५	ममता कालिया तथा सानिया के उपन्यास में चित्रित स्त्री–विमर्श	स्वप्निल बच्छाव	३३
१६	हिंदी दलित कविता में जाति व्यवस्था	प्रा. शांताराम वळवी	३५
१७	शंकरशेष के नाटकों में अभिव्यक्त सामाजिक संवेदना	प्रा.माधुरी प्रभुणे	३६
१८	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श : एक मूल्यांकन	डॉ. दस्तगीर देशमुख	३८
१९	प्रभा खेतान के 'पीली आँधी' उपन्यास में स्त्री–चित्रण	प्रा. समाधान गांगुर्डे	४०
२०	'जी, जैसी आपकी मर्जी' नाटक में स्त्री–विमर्श	डॉ. पठान रहीम खान	४२
२१	अनामिका के 'दस द्वार का पिंजरा' में स्त्री–विमर्श	मनिषा चिने	४३
२२	मालती जोशी के 'अग्निपथ' कहानी में स्त्री चेतना	प्रा. जयश्री पवार–पाचोरकर	४५
२३	प्रभा खेतान की कविताओं में स्त्री–विमर्श	तृप्ती मेनन	४६
२४	'चाँद के आँसू' उपन्यास में नारी–विमर्श	डॉ. सन्मुख मुच्छटे	४८
२५	समकालीन हिंदी आत्मकथाओं में दलित विमर्श	डॉ. बी. टी. शेणकर	५०
२६	समकालीन साहित्य में दलित विमर्श	प्रा. आर. जे. बहोत	५२
२७	समकालीन हिंदी कहानियों में दलित विमर्श	प्रतिभा उरसल	५३
२८	सुशीला कपूर की एकांकीयों में स्त्री– विमर्श	कल्पना शेजवळ	५५
२९	जयप्रकाश कर्दम के 'छप्पर' में दलित चेतना	संतोष रोडे	५७
३०	समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री–विमर्श	प्रा.सुरेश मुंढे, प्रा.दत्तात्रय येडले	५८
३१	नारी विमर्श की सशक्त काव्यकृति: द्रौपदी क्यों बँटी तुम	प्रा. व्ही. जी. राठोड	५९
३२	कहानी साहित्य में महिला कहानीकारों का स्त्री–विमर्श	प्रा. मीनल बर्वे	६१
३३	हिंदी साहित्य और स्त्री–विमर्श	प्रा. संजय महेर	६२
३४	समकालीन हिंदी कहानी साहित्य में नारी जीवन	प्रा नानासाहेब जावळे	६३
३५	समकालीन हिंदी कहानियों में दलित–विमर्श	प्रा.रवींद्र ठाकरे	६५
३६	भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानि अज़ीज़न	डॉ. संतोष मस्के	६६
३७	महिला नाटककारों की रचनाओं में स्त्री–विमर्श	शेख रुबीना	६८

ISBN 978-81-923650-7-7

क्र.	आलेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
३८	चित्रा मुद्गल की नारी–चेतना	प्रियंका	
३९	दलित विमर्श: 'अल्मा कबुतरी' उपन्यास के विशेष संदर्भ में	डॉ. प्रविण तुपे	
४०	दलित समाज के दर्द का दस्तावेज है – 'अपने–अपने पिंजरे'	डॉ. एम. एल. चव्हाण	
४१	समकालीन हिंदी आत्मकथाओं में दलित विमर्श	रेशमा खान	
४२	'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में चित्रीत स्त्री–विमर्श	डॉ.संजय जाधव	
४३	कात्यायनी के काव्य में स्त्री– विमर्श	शेख शिलीमन महेबूब	
४४	रुपसिंह चंदेल के 'रमला बहु' में नारी विमर्श	प्रा. अनिता राजबंशी	
४५	समकालीन हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री–विमर्श	डॉ. सुषमा कोंडे	
४६	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री–विमर्श	प्रा. सुचिता गायकवाड	
४७	समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में चित्रित नारी	लक्ष्मी मनशेट्टी	
४८	स्त्री विमर्श : स्वरूप और परिव्याप्ति	ज्योति संसारे	
४९	हिन्दी सिनेमा में स्त्री, दलित–विमर्श	प्रा. सुनंदा वाघ	
५०	स्त्री–विमर्श और समकालीन हिन्दी उपन्यास	शोभना भालेराव–आहेर	
५१	समकालीन कविता में स्त्री–विमर्श	वंदना भालेराव–शिंदे	
५२	समकालीन महिला लेखन में नारी अस्तित्व	सरवदे संगिता	
५३	समकालीन साहित्य में स्त्री विमर्श	जयभीम वाघमारे	
५४	हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श	डॉ.भारती धोंगडे	
५५	मृदुला गर्ग के उपन्यास साहित्य में महिला सशक्तिकरण	सुनिता पठारे	
५६	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री–विमर्श	पंडित नितिन	
५७	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श	प्रा.संध्या खंडागले	
५८	भूमंडलीकरण एवं स्त्री विमर्श	संतोष कारंडे	
५९	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	प्रा. शरद कोलते	
६०	संजीव ठाकूर के 'धार' उपन्यास में दलित चेतना	प्रज्ञा थोरात–पवार	
६१	दलित समकालीन व्यवस्था के संदर्भ में	नागनाथ भेंडे	
६२	भूमंडलीकरण एवं स्त्री–विमर्श	अशोक राऊतराय	
६३	उदय प्रकाश कृत 'मोहनदास' कहानी में दलित–विमर्श	शरद शिरोळे	
६४	वर्तमान हिंदी कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श	वंदना काटे	
६५	अलका सरावगी के 'शेष कादंबरी' में : स्त्री–विमर्श	सरला तुपे	
६६	ग्रामीण जीवन में जातियता : मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के संदर्भ में	सविता नागरे	
६७	मन्नु भंडारी की 'अकेली' कहानी में स्त्री–विमर्श	दिपाली तांबे	
६८	शिवानी के उपन्यासों में व्यक्त नारी विमर्श	किरण शिंदे	
६९	समकालीन आत्मकथाओं में नारी–विमर्श	प्रा.अनिता कुंभार्डे	
७०	मुक्ति पर्व में दलित चेतना	बबन साळवे	
७१	हिंदी नारी विमर्श : दशा एवं दिशा	पिनल पांढियार	
७२	नारी विमर्श : अनारो पर एक नज़र	पुरोहित पूर्वी	
७३	शैलेश माटियानी रचित 'अर्धांगिनी' कहानी में निरूपित स्त्री–विमर्श	प्रा. उत्तम येवले	
७४	डॉ. शिवप्रसाद सिंह के साहित्य में नारी जीवन	डॉ. प्रतिज्ञा पतकी	
७५	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	डॉ.सैय्यद मंजूर	

…किन जब लड़की हो या शिशु अपनी समस्याओं को स्वयं हल करने में आगे बढ़ती है तो वही चेतना का रूप है। इस नाटक में भी वही …है। जब लड़की को गर्भस्राव करने की बात होती है तो वह स्वयं पेट के कोख से कहती है कि – "अम्मा मुझे बचा लो, मत मारो मुझे, मत …रो... "मैं जीना चाहती हूँ।" ('जी, जैसी आपकी मर्जी' – नादिरा जहीर बब्बर, पृ.सं. 12) यह एक प्रकार की स्त्री की त्रासदी से भरी चेतना है।

आज कल समाज में ही नहीं, बल्कि खुद अपने ही घरों में लड़का और लड़की को समान रूप से देखा नहीं जाता है, क्योंकि दोनों में फर्क रखने की प्रवृत्ति घर से ही शुरू होती है। इस नाटक में दीपा कहती है कि "हमीं तो घर का सारा काम करती हैं। हम लोग झाड़ू करती हैं, कपड़े धोती हैं, बरतन मांजती हैं, अम्मा सौदा लाती है, रसोई भी संभालती है। भैया? भैया घर का कोई काम नहीं करता। फिर दादी कहती है कि – "छुटकी .... भय्या को पानी पिला, दिखता नहीं वो बाहर से आया है।" ('जी, जैसी आपकी मर्जी' – नादिरा जहीर बब्बर, पृ.सं. 15) इस प्रकार अपने परिवार में ही लड़की को कम नजरों से देखा जाता है।

अपने परिवार में ही अपने सदस्यों से अपनी लड़की को पिटवा दिया जाता है और कम नजर से देखते भी हैं। नाटक में अपने भाई को पानी न देने के कारण स्वयं दीपा का भाई, दीपा को थप्पड़ मारने के लिए उसकी दादी बोलती है कि "इसे आज ठीक कर ही दे बिटवा" इस प्रकार दीपा परिवार के सदस्यों के साथ छोटी-छोटी बातों पर पीटी जाती है और थोड़ी से ऊंची आवाज करने पर वह घसीटकर स्टोर में बंद कर दिया जाता है और उसे कहा जाता है कि – "अब कोठरी में बैठकर चिल्ला जितना चिल्लाना है।" ('जी, जैसी आपकी मर्जी' – नादिरा जहीर बब्बर, पृ.सं. 15)

इस विषय को लेकर बाबू जी कहती हैं कि – "लड़की की तरह पालो, लड़कों की तरह मिजाज मत दो, जिसे घर में भाई को पानी पिलाने में तकलीफ होती है फिर ससुराल में जाके जूते खाएगी जूते?" ('जी, जैसी आपकी मर्जी' – नादिरा जहीर बब्बर, पृ.सं. 15) इस प्रकार लड़की को घर में ही लड़की की तरह बनाया जाता है। उसे अपने परिवार से ही नरमी मिजाज जैसा अचेतन बनाया जा रहा है।

यों ही नहीं मध्य वर्ग के लोगों की यह मानसिकता है कि अगर आर्थिक तंगी हो तो, वह खासकर लड़की पर ही पड़ती है। नाटक में दीपा क… है कि- "मुझे और मेरी दीदियों को कभी भी पहनने के लिए अच्छे कपड़े नहीं मिले। दीवाली पर साल में एक बार हमारे नए कपड़े बनते हैं, वो भी सड़क पर बैठे हुए दुकानदारों से और भैया के कपड़े बड़ी दुकान से खरीदते हैं।" ('जी, जैसी आपकी मर्जी' – नादिरा जहीर बब्बर, पृ.सं. 17) इस प्रकार की मानसिकता परिवार से ही लड़की को मिलती है।

यही असमानता की मानसिकता स्त्री की पढ़ाई में भी है। दीपा कहती है कि – "क्यों भैया इंगलिश मीडियम में और हम बहिनें हिन्दी मीडियम में .....।" ('जी, जैसी आपकी मर्जी' – नादिरा जहीर बब्बर, पृ.सं. 18) भैया को दो-दो ट्यूशन फिर भी घिसट-घिसट के पास होता है। हम बिना ट्यूशन के स्कालरशिप लाते हैं। फिर भी क्यों नहीं प्यार करते हमें ...... क्यों नहीं प्यार करते हमें सब लोग ..... ? क्या बुराई है हममें। हमें भी तो प्यार चाहिए न?" ('जी, जैसी आपकी मर्जी' – नादिरा जहीर बब्बर, पृ.सं. 19) इस प्रकार लड़की अपने परिवार के सदस्यों से प्यार, स्नेह के लिए तरसती है। लड़की को अपने परिवार में उसे समानता तो क्या प्यार भी नहीं मिलता है।

नाटक के अंत में लेखिका आजकल के युवा पीढ़ी की मानसिकता की ओर जोर देते हुए कहती है कि- "मैंने तो सुना है कि जो लड़कियाँ सर्विस करती है, गल पक्की होने के टाइम पर उनकी पे-स्लिप भी चेक करते हैं। छि....मुझे ये सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।" ('जी, जैसी आपकी मर्जी' – नादिरा जहीर बब्बर, पृ.सं. 36) इस प्रकार लड़कों के बदलते मानसिक विचारों को व्यंग्यतापूर्ण शैली में हमारे सामने रखने का प्रयास किया गया है।

नाटक में नाटककार यह बताने की कोशिश की है कि नारी शिक्षा, चेतना और मर्द को अपने किए गुनाहों की ओर ध्यान देना और उन अ…ुणों को सही बनाने का प्रयत्न करवाने की बात रखी गई है और समाज में नारी को पुरुष के समान बराबर देखने की ओर इशारा किया गया है।

(असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, गच्ची बौली, हैदराबाद - 500 032, आन्ध्र प्रदेश)

21 अनामिका रचित 'दस द्वार का पिंजरा' में निरूपित स्त्री–विमर्श

मनिषा चिने

समाज व पुरुष के वर्चस्ववाद के प्रतिक्रिया स्वरुप विमर्श का निमार्ण हुआ, उसे ही साहित्य एवं समाज में स्त्री विमर्श कहाँ गया है। स्त्री को गरिमा और गौरव दिलाने का कार्य वह करता हैं। चित्रा मुदगल के नुसार औरत अभी तक पैदा नहीं होती थी, बनायी जाती रही है। औरत का जन्म होना अभी तक भविष्य के गर्भ में है। स्त्री विमर्श इसी औरत के जन्म की कोशिशों का विमर्श है।

विमर्श–एक निरन्तर चलनेवाली प्रक्रिया है, जो विमर्शित विषय को कई आयामों के माध्यम से किसी अभिलक्षित लक्ष्य तक

ISBN 978-81-923650-7-7

पहुँचाने का कार्य करती है। संवाद बहस या सार्वजनिक चर्चा जिसे हम कह सकते है मान्यताओं के निर्माण की प्रक्रिया है। परन्तू स्त्री-विमर्श की व्याप्ति अति व्यापक है वह साहित्य समाज व्यवहार व्यवसाय देश की सिमाओं से बाहर भी है।

स्त्री विमर्श स्वरुप- स्त्री की परंपरागत 'छवि' और 'पहचान' से अलग एक नयी 'पहचान' एक नई 'छवि' का निर्माण करना। स्त्री के आस्तित्व, उसके अधिकारों, उसकी अस्मिता उसके एक मानवीय इकाई के रुप में प्रतिष्ठित होने के संघर्ष को स्त्री विमर्श कहा जाता है। वैदिक काल में स्त्री को दुय्यम स्थान दिया गया था, वह पशु, पक्षियों की तरह खूँटे से बँधकर जीती रही। आज स्वतंत्र चेतना का विकास हुआ, स्त्री ने खुद को प्रतिष्ठापित रुप में देखना चाहा इस प्रक्रिया और प्रविधि को 'स्त्री विमर्श' कहा जा सकता है।

सर्वप्रथम सम्बवत: जयशंकर प्रसाद ने नारी स्वतंत्रता की बात उठायी उसी युग में प्रेमचंद जी आये उन्होने अपनी कहानियों में उपन्यासों नारी से सम्बन्धित समस्याओं को उठाया-जिनमें प्रमुख दहेज की समस्या, 'सेवासदन' की सुमन कोठेपर पहुँचती है, 'बडे घर की बेटी' में आनंदी परिवार को बचाती है 'गोदान' मे धनिया त्याग, तपस्या और स्वभिमान की मूर्ती है। सिलिया शारीरिक शोषण की शिकार होती है 'झुनिया' बिरादरी की न होकर भी धनियाँ उसे अपनाती है। मालती एक प्रगतिशील महिला के रुप में सामने आती है।

यशपाल और जैनेन्द्र के उपन्यास भी नारी स्वतंत्रता की और बढ़ती हुअी दिखायी गयी है। द्वितीय विश्वयुध्द के बाद आस्तित्वाद और मनोविश्लेषण से काम कुण्ठा बनायी गयी यह दिखानेवाले लेखक है इलाचन्द्र जोशी, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मार्कण्ड, भीष्म साहनी, मोहन राकेश, मन्नु भंडारी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया इन सभी ने नारी को अपने साहित्य में सन्मान प्रदान किया यह सन १९८० के बाद हुआ इन साहित्यकारों ने अपनी कहानीयों में, उपन्यासों में जीवन का यथार्थ दिखाया पर जीवन की कुरुपता से पीछा नहीं छूँटा जो भी हो कथा और उपन्यास साहित्स में हमे जिस नारी के दर्शन होते है, वह स्वतंत्रता की ओर बढा रही है प्रगति कर रही है स्वतंत्रता ओर अन्य अधिकारों से सजग होकर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है यही दर्शन का प्रयास अनामिका जीने अपना उपन्यास 'दस द्वारे का पींजरा' में पुराने पात्रों का सहारा लेकर नये तरीके से प्रतिपादित करने की सफल कोशिश की है। कह सकते है कि उपन्यास की कथावस्तू जो पुरानी है पर उसकी सोच पुरी तरह नयी है।

'दस द्वारे का पींजरा' अनामिका जी रचित उपन्यास में प्रमुख पात्र के रुप में स्त्रीओं को ही प्रथम स्थान दिया हैा जैसे पंडिता रमाबाई, ढेलाबाई, फैनीपावर्स जो देह दूसरों को आनंद दिलानेवाली चीज समझती है और प्रथम महिला भारतीय डॉक्टर आनंदी जोशी है जो उम्र में बडे.पती से शादी करती है और उनकी इज्जत का खयाल करके जीती है।

''चौका चुल्हा भूलकर स्त्रियाँ ज्ञान-विज्ञान में रस लेने लगी तो सारी दिनचर्या बिगड जाएगी।'' १

एक अनुठा उपन्यास 'दस द्वारे का पींजरा' जो अनामिका जी ने लीखा है। पंडिता रमाबाई के पिता जो जाति से ब्राहमण समाज के है। पर वह उनकी पतकी और पुत्रियों को शास्त्र पढाते, सुबह-शाम उनसे अलग-अलग रहस्यमय विषयों पर विचार विमर्श करते इसी की समाज ने उन्हें बहोत बडी सजा दी इन्हे महाराष्ट्र के अपने ब्राहमण समाज से जाति-बहिष्कृत किया गया फिर उन्होने आंध्र का गंगामूल आश्रम पौराणिक अध्ययन केंद्र के रुप में विकसित किया स्त्रीयों की शिक्षा से आपत्ती होती यह सवाल अगर खडा हो जाता तो शास्त्रों से ३०० सन्दर्भ छाँटकर उसका समर्थन करते पर यथास्थिति वादियों को शास्त्रों की बातें अमल में लाने के लिए द्वन्द्व करके परिवार के साथ देश-देशान्तर भ्रमण करना पड़ता है, यह सचाई जिह्वा पर अगर सरस्वती जी का वास है तो विद्या के उपासकों की कमी नहीं वह कहीं पे भी मिल ही जाते है।

''क्यो होगी वह सती, वह जीवित होता तो इसकी खातिर सता होता क्या?''२

पुरुषवर्चस्ववादी समाज की कैसी रित है यह पुरानी बातों का सहारा लेकर बालविवाह, सती जैसी प्रथा को इस उपन्यास में अनामिका जी ने नयी सोच दर्शायी है। चम्पा को तो शादी का मतलब भी पता नहीं जीवन में पहली दफा नए कपडे और गहने पहने को मिलते है सुबह से पहनकर वह उछलती है और शाम को माँ की गोंद में सोने की जिद्द करती है तभी बारात आती है और आखिर कार शादी हो ही जाती है। दुल्हे को देखकर अपनी सहेलियों में डर मारे छूप जाती हैं। दस-बाहर दिन रहकर उसका शौहर रंगून चला जाता है वापस आता है तो तपेदिक का मरीज होकर ओर मर जाता है। तभी चम्पा को बलि के बकरे के भाँति सजा धजाकर, गेंदे की लम्बी माला पहनाकर वह चिता पर बिढाई जाती है लोग जयकारे करते पर यह रमा से नहीं देखा जाता वह आव देखती ना ताव उसे उतारने की कोशिश करती पर सभा प्रतिकार दर्शाते तभी रमा उनसे कहती अगर यह मरती तो क्या उसका पती उसके साथ सता होता बीवी मरने के बाद वह जी सकता है तो यह क्यों नहीं!

''मैं भी माँ की वैसी ही सन्तान हूँ जैसा श्रीधर है। स्त्री काया में हूँ तो क्या, हर जिम्मेदारी निभा सकती हूँ।''३

अनन्तशास्त्री जब गुजरते है तो पुरा परिवार बे सहारा हो जाता है एक मन्दिर में शरण लेता हैं सदाव्रत जो शास्त्री जी का शिष्य थ वह भी पढाई के लिए विदेश चला जाता है, माँ का नाम तो लक्ष्मीबाई था पर काया पूरी सूखी हुअी थी फिर भी वह रमाबाई और श्रीध के लिए रातभर पेहरा देती है आखिर में जीर्ण-शार्ण वृध्द काया चल बसती है तभी रमा के पास अर्थी का प्रश्न उपस्थित होता है उ लगता तो ऐसा ही है कि इन दु:खों से मुक्तीपाने के लिए अभी माँ के गर्भ में चली जाऊँ क्योंकी इससे सुरक्षित जगह दुनिया में कही नहीं। रमा माँ का सिर श्रीधर की गोदी में रखकर दो लोगों का इंतजाम कर पाती है तिसरा कंधा श्रीधर देता है तभी रमा चौथा कंधा देने उठ

ISBN 978-81-923650-7-